राष्ट्रीय सूचना प्रौद्योगिकी सम्मान

वर्ष 2023

अमकेश्वर मिश्रा, भोपाल

पूर्व में सम्मानित संस्था एवं लेखक

1.	गूगल	2015
2.	माइक्रोसाफ्ट कार्पोरेशन प्रा. लि.	2016
3.	डॉ. अनुराग सीठा, भोपाल	2017
4.	डॉ. बालेन्दु शर्मा दाधीच, गुड़गाँव	2018
5.	श्री जयदीप कर्णिक, दिल्ली	2019
6.	श्री ऋतम् संस्था, दिल्ली	2020
7.	श्री रविशंकर श्रीवास्तव, भोपाल	2021
8.	डिजिटल इंडिया भाषिनी संस्थान, नई दिल्ली	2022

अमकेश्वर मिश्रा

आईटी के क्षेत्र में हिन्दी जगत की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए निरंतर प्रयासरत तथा पेशेवर तकनीकी कौशल एवं संवर्धन के लिए कार्यरत श्री अमकेश्वर मिश्रा कम्प्यूटर तथा आईटी के हिन्दी भाषा में पथ-प्रदर्शक की भूमिका निभाने वाले हिन्दी भाषा का एक विशिष्ट नाम हैं। आपने पी.जी. डिप्लोमा, बैचलर तथा एम.एस.सी. कम्प्यूटर साइंस की उपाधियाँ प्राप्त की हैं।

आप आईटी विशेषज्ञ, कम्प्यूटर सॉफ्टवेयर, सर्च इंजन, वेब डिजाइनिंग, डिजिटल कन्वर्जन, एआई एवं सोशल मीडिया के विभिन्न डिजिटल एवं ऑडियो-विजुअल सॉफ्टवेयर में कार्य करते हैं। वर्ष 2006 से 'सेंटर फॉर रिसर्च एण्ड इंडस्ट्रियल स्टाफ परफॉरमेंस' (क्रिस्प) में आप सीनियर एग्जीक्यूटिव आईटी के रूप में कार्यरत है।

आप वेबसाइट, डोमेन, विशिष्ट ई-मेल आईडी और अन्य ऑनलाइन सेवाओं के लिए जनसंपर्क संचालनालय एवं अधीनस्थ संभागीय तथा जिला कार्यालयों के साथ नियमित रूप से समन्वयक की भूमिका निभाते है, इसके साथ ही विभिन्न शासकीय एवं अर्द्धशासकीय संस्थाओं के लिए उच्च-क्षमता वाले तकनीकी और प्रबंधन कौशल के सॉफ्टवेयर निर्माण में भी समन्वयक है। आप एचसीएल इन्फो सिस्टम लिमिटेड के साथ ऑन जॉब ट्रेनिंग प्रोग्राम में सहभागी है तथा कम्प्यूटर लाइसेंसिंग सॉफ्टवेयर इंस्टाल-संधारण आदि कार्यों में भी दक्ष है।

आईटी ऑपरेशन्स, शासकीय वेबसाइटों की मॉनिटरिंग, कम्प्यूटर हार्डवेयर और नेटवर्किंग, वेब आधारित एप्लीकेशन, डाटा प्रोसेसिंग, टीम प्रबंधन, क्लाइंट इंटरफेसिंग डॉक्यूमेंटेशन जैसे कार्यों का आपको व्यापक अनुभव है, इसके साथ ही आप डिजिटल मीडिया, इलेक्ट्रॉनिक मीडिया, प्रिंट मीडिया एवं ऑनलाइन बिलिंग सिस्टम गतिविधियों के सफल संचालन और उसके रखरखाव से निरन्तर जुड़े हुए हैं। आपने विभिन्न शासकीय एवं अर्द्धशासकीय संस्थाओं में कम्प्यूटर टेक्नोलॉजी के प्रचार-प्रसार के लिए कार्यशालाएँ एवं प्रशिक्षण शिविरों का संचालन एवं नेतृत्व किया है, जिनमें लिपि ऑफिस, एमएस ऑफिस, टेली जैसे अकाउंटिंग सॉफ्टवेयर तथा हिंदी के यूनिकोड सॉफ्टवेयर शामिल हैं। विभिन्न शासकीय कार्यालयों के लिए सॉफ्टवेयर प्रस्तोता तथा विभिन्न व्यावसायिक संस्थाओं के लिए भाषायी सॉफ्टवेयर डेवलपमेंट में भी आपकी भागीदारी है।

आपने विभिन्न शासकीय संस्थानों में अतिथि शिक्षक के रूप में प्रशिक्षण प्राप्त किया गया है, जिनमें आरसीवीपी नरोन्हा प्रशासन एवं प्रबंधन अकादमी, राज्य कृषि विस्तार एवं प्रशिक्षण संस्थान, जल एवं भूमि प्रबंधन संस्थान, वल्लभ भवन कम्प्यूटर ट्रेनिंग सेंटर तथा माखनलाल विश्वविद्यालय में सूचना प्रौद्योगिकी पर आधारित विभागीय प्रशिक्षण शामिल है। आपने हिन्दी में एक्सेल 'एक परिचय', 'कम्प्यूटर कोडिंग : एक परिचय' तथा 'एआई तकनीक का भविष्य' जैसी पुस्तकों के लेखन में सहयोग किया है इसके साथ ही हिन्दी स्पेल चैक सॉफ्टवेयर डेवलपमेंट में भी आपकी सहभागिता रही है।

मध्यप्रदेश शासन **श्री अमकेश्वर मिश्रा, भोपाल** को प्राविधिक सशक्तिकरण के साथ ही आंगुलिक पटल में वेबसाइट निर्माण एवं वेब दुनिया के माध्यम से हिन्दी को लोकव्यापी करने और उसकी सम्भावना के क्षेत्र में विस्तार हेतु स्थापित **राष्ट्रीय सूचना प्रौद्योगिकी सम्मान वर्ष 2023** से सादर विभूषित करता है।

राष्ट्रीय निर्मल वर्मा सम्मान
वर्ष 2022

डॉ. हंसा दीप, टोरंटो (कनाडा)

पूर्व में सम्मानित लेखक

1.	श्री सुरेश चन्द्र शुक्ल, नार्वे	2015
2.	श्री तेजेन्द्र शर्मा, यूनाइटेड किंगडम	2016
3.	डॉ. रामप्रसाद भट्ट, हेम्बर्ग जर्मनी	2017
4.	सुश्री अर्चना पैन्यूली, डेनमॉक	2018
5.	डॉ. कृष्ण कुमार, बर्मिघम	2019
6.	श्री रोहित कुमार 'हैप्पी', न्यूजीलैण्ड	2020
7.	सुश्री शिखा वार्ष्णेय, लंदन	2021

डॉ. हंसा दीप, टोरंटो (कनाडा)

डॉ. हंसा दीप का जन्म मेघनगर (झाबुआ, म.प्र.) में हुआ है। आपने हिन्दी विषय में पीएच.डी. की उपाधि प्राप्त की हैं। वर्तमान में आप यूनिवर्सिटी ऑफ टोरंटो में प्राध्यापक के पद पर पदस्थ है। पूर्व में आप न्यूमॉर्क और अमेरिका की सुप्रसिद्ध संस्थाओं में हिन्दी शिक्षण तथा यॉर्क विश्वविद्यालय, टोरंटो में हिन्दी कोर्स डायरेक्टर के पद पर कार्य कर चुकी हैं। डॉ. हंसा दीप का लोक साहित्य के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान रहा है।

लोक साहित्य पर आपकी एक महत्वपूर्ण पुस्तक 'सौंधवाड़ी लोक धरोहर' प्रकाशित है, जिसे काफी सराहा गया है। इसके अतिरिक्त आपके द्वारा लिखित उपन्यासों में 'बंद मुट्ठी', 'कुबेर', 'केसरिया बालम' एवं 'कांच के घर' शामिल हैं। इनमें से 'बंद मुट्ठी' गुजरती एवं 'केसरिया बालम' मराठी भाषा में अनूदित है। आपके कुल 8 कहानी संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं। आपके द्वारा सम्पादित कहानियों के संग्रहों में भी आपकी साहित्यिक प्रतिभा का अद्‌भुत प्रदर्शन होता है। मराठी, पंजाबी, बांग्ला, तमिल एवं उर्दू की पत्र-पत्रिकाओं में आपकी अनुवादित रचनाएँ निरंतर प्रकाशित होती रहती हैं।

पंजाबी में अनूदित आपका कहानी संग्रह - पूरन विराम तों पहिलां एवं मराठी में दो कहानी संग्रह - आणि शेवटी तात्पर्य एवं मन गाभन्यातील शिल्पे है। कई सुप्रतिष्ठित रचनाओं एवं पत्रिकाओं का संपादन आपके द्वारा किया गया है जिसमें कनाडा की चयनित रचनाएँ, विश्वरंग भोपाल, कथारंग, शब्द घोष पत्रिका के प्रवासी विशेषांक, अंतरदेश पत्रिका के कनाडा विशेषांक शामिल है, इसके साथ ही आपने कैनेडियन विश्वविद्यालयों में हिन्दी छात्रों के लिए अंग्रेजी, हिन्दी पाठ्यपुस्तकों के कई संस्करण प्रकाशित कराये है। आपकी पत्रिकाओं के संपादक मंडल में - रचना उत्सव, अंतरदेश, समकालीन हस्तक्षेप, शब्द घोष शामिल हैं। आपने कई सुप्रतिष्ठित अंग्रेजी फिल्मों में सब-टाइटल्स का अनुवाद भी किया है।

भारत, अमेरिका, कनाडा, ब्रिटेन, सिंगापुर की प्रमुख हिन्दी एवं अंग्रेजी पत्रिकाएँ जैसे की हंस, वनमाली, नया ज्ञानोदय, कथादेश, वागर्थ, इंद्रप्रस्थ-भारती, पाखी, सेतु, सौरभ, चेतना, पुरवाई के अलावा कई पत्र-पत्रिकाओं में भी आपकी कहानियाँ निरंतर प्रकाशित होती रही है। आपको कई पुरस्कारों से सम्मानित किया जा चुका है, जिसमें - कथारंग सृजन सम्मान, जयपुर साहित्य सम्मान, पुरवाई कथा सम्मान, शांति गया सम्मान, धनपति देवी स्मृति- कथा साहित्य सम्मान आदि शामिल हैं। साथ ही आप विश्व हिन्दी सचिवालय, मॉरीशस - अन्तरराष्ट्रीय रिपोर्ताज-2023 से भी पुरस्कृत हैं।

मध्यप्रदेश शासन **डॉ. हंसा दीप** को विदेश में हिन्दी भाषा के विकास, विस्तार और संवाद के लिए किये गये सार्थक एवं निरन्तर प्रयत्नों हेतु आप्रवासी भारतीयों के लिए स्थापित **राष्ट्रीय निर्मल वर्मा सम्मान वर्ष 2022** से सादर विभूषित करता है।

राष्ट्रीय निर्मल वर्मा सम्मान
वर्ष 2023

डॉ. अनुराग शर्मा, पेंसिलवेनिया

पूर्व में सम्मानित लेखक

1.	श्री सुरेश चन्द्र शुक्ल, नार्वे	2015
2.	श्री तेजेन्द्र शर्मा, यूनाइटेड किंगडम	2016
3.	डॉ. रामप्रसाद भट्ट, हेम्बर्ग जर्मनी	2017
4.	सुश्री अर्चना पैन्यूली, डेनमॉक	2018
5.	डॉ. कृष्ण कुमार, बर्मिंघम	2019
6.	श्री रोहित कुमार 'हैप्पी', न्यूजीलैण्ड	2020
7.	सुश्री शिखा वार्ष्णेय, लंदन	2021
8.	डॉ. हंसा दीप, टोरंटो	2022

डॉ. अनुराग शर्मा, पेंसिलवेनिया

डॉ. अनुराग शर्मा एक लेखक, सम्पादक और विचारक है। आपने पिट्सबर्ग (संयुक्त राज्य अमेरिका) में निवास करते हुए, हिन्दी भाषा के विकास में अमूल्य योगदान दिया है। आपकी कथाएँ पाठकों को अपनी अंतिम पंक्ति तक बांधे रखने में सक्षम है। आपकी कहानी पढ़ते हुए अकसर पाठकों को निजी संस्मरण की अनुभूति होती है। एक पूर्णत: अप्रत्याशित अंत आपके कथालेखक की विशेषता है।

लिखना, पढ़ना, वार्ता और सामाजिक संवाद डॉ. अनुराग शर्मा की अभिरुचि है। आपके तकनीकी प्रपत्र अन्तरराष्ट्रीय संस्थानों में पढ़े गये हैं तथा प्रकाशित हुए हैं। ऑनलाइन पत्रिका 'सृजनगाथा' और 'गर्भनाल' पर पश्चिमी सभ्यता और संस्कृति के आप स्तम्भकार रहे है। डॉ. अनुराग शर्मा की छ: सौ से अधिक गद्य एवं पद्य रचनायें विभिन्न पाठ्यपुस्तकों तथा पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित हो चुकी हैं। आपकी नवीनतम पुस्तक 'मेरी लघुकथाएँ' केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, आगरा से प्रकाशित हुई है। आपने 'इंडिया एज़ इन आईटी सुपर पॉवर' नामक पुस्तक लिखीं है, जिसमें आपने तथ्यों द्वारा सिद्ध किया है कि हाईटेक क्षेत्र के लिए भारत और भारतीय संस्कृति नैसर्गिक रूप से अग्रणी है।

आज से बीस साल पहले डॉ. अनुराग शर्मा जी ने इंटरनेट पर चौबीस घंटे चलने वाले भारतीय रेडियो स्टेशन 'पिटरेडियो' की स्थापना की थी। भारत से दूर रहते हुए आपने 2008 में हिन्दी का पहला 'पॉडकास्ट कवि सम्मेलन' चलाया। हिन्दी में अनेक रेडियो नाटकों, 'शब्दों की चाक पर', 'सुनो कहानी' और 'बोलती कहानियाँ' जैसे स्वर - आकर्षणों का संचालन कर चुके डॉ. अनुराग ने विनोबा भावे के गीता प्रवचन तथा प्रेमचंद

की कहानियों की पहली ऑडियो-बुक को स्वर दिया है। आप अब तक तीन सौ से अधिक हिन्दी कहानियों का ऑडियो प्रसारण कर चुके है। आपकी लघुकथा 'पागल' पर एक टेलीफिल्म भी बन चुकी है, और नाटक 'मानस की जात' का मंचन विश्व हिन्दी सचिवालय, मॉरीशस के हिन्दी समारोह में हो चुका है।

'तिब्बत के मित्र', 'यूनाइटेड वे' एवं 'निरामिष' जैसे सामाजिक संगठनों से जुड़े डॉ. अनुराग शर्मा वर्ष 2005 की सुनामी में एक लाख डॉलर की सहायता राशि जुटाने वाली समिति के सक्रिय सदस्य थे। हिन्दी लेखकों की वार्षिक वैश्विक 'राही' रैंकिंग में आप निरन्तर उपस्थित रहे हैं। आप पिछले 9 वर्षों से पिट्सबर्ग से प्रकाशित 'मासिक सेतु' के मुख्य संपादक है। आईटी प्रबंधन में स्नातकोत्तर डॉ. अनुराग शर्मा एक बैंकर रह चुके हैं और देश के लगभग सभी प्रमुख साहित्यिक मंचों से आपने प्रतिभागिता की है।

मध्यप्रदेश शासन **डॉ. अनुराग शर्मा** को विदेश में हिन्दी भाषा के विकास, विस्तार और संवाद के लिए किये गये सार्थक एवं निरन्तर प्रयत्नों हेतु आप्रवासी भारतीयों के लिए स्थापित **राष्ट्रीय निर्मल वर्मा सम्मान वर्ष 2023** से सादर विभूषित करता है।

राष्ट्रीय फादर कामिल बुल्के सम्मान

वर्ष 2022

सुश्री अतिला कोतलावल, श्रीलंका

पूर्व में सम्मानित लेखक

1.	प्रो. रिचर्ड बार्ज, सिडनी	2015
2.	डॉ. हेमराज सुंदर, मॉरिशस	2016
3.	प्रो. जियांग जिंग कुई, चीन	2017
4.	सुश्री आनी मान्तो, फ्रांस	2018
5.	डॉ. बीरसेन जागासिंह, मॉरिशस	2019
6.	प्रो. हिदेआकि इशिदा, जापान	2020
7.	डॉ. हाइंस वर्नर वेस्लर, डेनमार्क	2021

सुश्री अतिला कोतलावल

सुप्रतिष्ठित लेखिका सुश्री अतिला कोतलावल का जन्म कुलियापिटिय (श्रीलंका) में हुआ है। बचपन से ही आपको विदेशी भाषाओं में गहरी रुचि थी। श्रीलंका के हाईस्कूल की परीक्षा पास करने के उपरांत आपको केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, आगरा (भारत) में हिन्दी भाषा की उच्च शिक्षा प्राप्त करने लिए भारतीय उच्चायोग से दो बार 100 प्रतिशत छात्रवृत्ति प्राप्त हुई, इसके बाद श्रीलंका के केलनिया विश्वविद्यालय से बीए की उपाधि (हिन्दी भाषा, भाषा विज्ञान और पुरातत्व) आपने सफलतापूर्वक प्राप्त की। हिन्दी भाषा के प्रति आपकी प्रतिबद्धता ने आपको वर्ष 2000 में 'हिन्दी संस्थान, श्रीलंका' (HSSL) की स्थापना के लिए प्रेरित किया, जिसका मुख्य उद्देश्य श्रीलंकाई छात्रों को हिन्दी भाषा सिखाना तथा उन्हें भाषा दक्षता के लिए तैयार करना और भारतीय संस्कृति के निकट लाना था। सन् 2012 में श्रीलंका में सर्वप्रथम सार्वजनिक पुस्तकालय की स्थापना आपकी सबसे बड़ी उपलब्धि रहीं, जिसका लाभ श्रीलंका के प्रत्येक क्षेत्र में हिन्दी पढ़ने वाले विद्यार्थी उठा रहे है।

इस संस्थान की स्थापना से आपकी एक अलग पहचान स्थापित हुई, जिसके कारण वर्ष 2006 में भारतीय सांस्कृतिक केन्द्र, भारतीय उच्चायोग, कोलंबो द्वारा और वर्ष 2016 में भारत के सहायक उच्चायोग, कैंडी द्वारा भारत से विदेशी राजनयिक मिशन के तहत बहुराष्ट्रीय और वहाँ के छात्रों को हिन्दी पढ़ाने के लिए आपको विशेष रूप से चुना गया। सुश्री अतिला कोतलावल विभिन्न आयु वर्ग के छात्रों को, भिक्षुओं को और बच्चों को हिन्दी पढ़ाने में विशेषज्ञता रखती है। आप विशेष रूप से बोलचाल की हिन्दी पर बल देते हुए हिन्दी फिल्मों, संवादों के माध्यम से कई वर्षों से भारतीय विशेषज्ञों के सहयोग से पाठ्यक्रम चला रही हैं।

हिन्दी शिक्षण के साथ ही अनुवाद कार्य में भी आपकी सक्रिय भागीदारी रही है, आपने हिन्दी फिल्मों, टीवी सीरीज़ का हिन्दी अनुवाद किया है, इसके अलावा इलेक्ट्रानिक तथा प्रिंट मीडिया के साथ ही विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में आपके आलेख छपते रहे हैं। कई अवसरों पर भारतीय उच्चायोग और कुछ अन्य संगठनों के साथ मिलकर आप वीआईपी लोगों के लिए

दुभाषिया के रूप में कार्य करती है। आपने श्रीलंका में रामायण स्थलों की यात्रा करने के लिए भारत के विभिन्न हिस्सों से आए 800 से अधिक भारतीय नागरिकों को दुभाषिया और गाइड के रूप में अपनी सेवाएँ प्रदान की हैं, जिनमें 2010 में मध्यप्रदेश शासन के माननीय मुख्यमंत्री के साथ ही सुप्रसिद्ध गायक रविशंकर शर्मा की श्रीलंका यात्रा भी शामिल हैं। इसके साथ ही आप एक प्रेरक सार्वजनिक वक्ता, योग शिक्षक तथा सार्वजनिक कार्यकर्ता के रूप में अपनी सेवाएँ प्रदान करती हैं।

एक हिन्दी लेखिका के रूप में आपने देश के विभिन्न साहित्यिक मंचों से प्रतिभागिता की है, जिनमें अंतरराष्ट्रीय हिन्दी सम्मेलन, भारत-श्रीलंका हिन्दी सम्मेलन, 10वें एवं 12वें विश्व हिन्दी सम्मेलन के साथ ही विश्वरंग, भोपाल एवं मॉरीशस शामिल हैं। आपको अब तक विभिन्न मान-सम्मान से नवाजा गया है, जिनमें हिन्दी विशारद पुरस्कार, हिन्दी शिरोमणि पुरस्कार, युवा हिन्दी सेवा सम्मान, हिन्दी प्रचार सम्मान, विश्वरंग अन्तरराष्ट्रीय सम्मान इत्यादि शामिल है। सुश्री अतिला कोतलावल हिन्दी संस्थान, श्रीलंका की संस्थापक निदेशक है। वर्तमान में आप स्वामी विवेकानंद सांस्कृतिक केन्द्र, कोलंबो में शिक्षक के रूप में कार्यरत है।

मध्यप्रदेश शासन **सुश्री अतिला कोतलावल, श्रीलंका** को विदेशी मूल के व्यक्ति द्वारा हिंदी भाषा की समृद्धि तथा उसके विकास में किये गये अमूल्य योगदान के लिए स्थापित **राष्ट्रीय फादर कामिल बुल्के सम्मान वर्ष 2022** से सादर विभूषित करता है।

राष्ट्रीय फादर कामिल बुल्के सम्मान

वर्ष 2023

सुश्री दागमार मारकोवा, चेक गणराज्य

पूर्व में सम्मानित लेखक

1.	प्रो. रिचर्ड बार्ज, सिडनी	2015
2.	डॉ. हेमराज सुंदर, मॉरिशस	2016
3.	प्रो. जियांग जिंग कुई, चीन	2017
4.	सुश्री आनी मान्तो, फ्रांस	2018
5.	डॉ. बीरसेन जागासिंह, मॉरिशस	2019
6.	प्रो. हिदेआकि इशिदा, जापान	2020
7.	डॉ. हाइंस वर्नर वेस्लर, डेनमार्क	2021
8.	सुश्री अतिला कोतलावल, श्रीलंका	2022

सुश्री दागमार मारकोवा, चेक गणराज्य

जब कोई विदेशी विद्वान आपकी राष्ट्रभाषा में अपने विचारों को अभिव्यक्त करने का सामर्थ्य रखता है और आपकी राष्ट्रभाषा की आत्मा और उनके मुहावरों को आत्मसात कर लेता है तब वो वस्तुत: सांस्कृतिक राजनय का राजदूत होता है और दो राष्ट्रों के बीच सेतु की भूमिका का निर्वाह करता है- यह बात भारत की केन्द्रीय मानव संसाधन मंत्री स्व. श्रीमती सुषमा स्वराज ने वर्ष 2015 में भोपाल में आयोजित होने वाले 10वें विश्व हिन्दी सम्मेलन के आयोजन के अवसर पर आयोजित पत्रकारवार्ता में कही थी। उनका यह कथन चेकोस्लोवाकिया की प्रखर लेखिका दागमार मारकोवा के व्यक्तित्व और कृतित्व को अक्षरश: व्यक्त करता है।

हिन्दी, संस्कृत और चेक भाषा की अध्येता और लेखिका दागमार मारकोवा का जन्म 12 अगस्त, 1935 को तत्कालीन चेकोस्लोवाकिया में हुआ था। आपने चेक भाषा के साथ-साथ हिन्दी और संस्कृत भाषा का भी अध्ययन किया है। आपने वर्ष 1953 से 1957 तक चार्ल्स विश्वविद्यालय, प्राग और वर्ष 1958 से वर्ष 1964 तक हुमबोल्टस विश्वविद्यालय, बर्लिन में हिन्दी का अध्यापन किया है। आपने अपनी उच्च शिक्षा के दौरान स्नातकोत्तर अध्ययन में-वर्ष 1947 के बाद के हिन्दी उपन्यासों में नारी समस्या विषय पर शोध प्रबन्ध भी लिखा है।

सुश्री दागमार ने वर्ष 1965 से वर्ष 1969 में जर्मन अकादमी के पूर्वी देशों के संस्थान में अनुसंधान कार्य किया है और बाद में विदेशी भाषाओं के अन्य स्कूलों में हिन्दी साहित्य का अध्यापन किया है। इन स्कूलों में चार्ल्स विश्वविद्यालय प्रमुख था। आप हिन्दी की एक दक्ष शिक्षिका के साथ एक अच्छी अनुवादक भी हैं। आपने हिन्दी से चेक भाषा में और चेक भाषा से हिन्दी में अनुवाद का व्यापक काम किया है। आपने सहलेखिका के रूप में हिन्दी- चेक शब्दकोश (प्राग) और चेक-हिन्दी शब्दकोश (दिल्ली) तैयार करने में भी सहयोग दिया है। आपने वर्ष 1965 से वर्ष 1968 तक हिन्दी साहित्य के क्षेत्र में जर्मन विद्या अकादमी के प्राच्य संस्थान में भी कार्य किया है। वर्ष 1997 में इटली के वेनिस शहर में भी आपने हिन्दी साहित्य का अध्यापन किया है।

हिन्दी के प्रति आपका लगाव इस एक बात से भी प्रकट होता है कि आप ने भारत के नागपुर में आयोजित पहले विश्व हिन्दी सम्मेलन में वर्ष 1975 में भी प्रतिभागिता की थी। सुश्री दागमार इन दिनों चेक कहानी तथा कथा साहित्य के हिन्दी अनुवाद में सृजनरत है। आप अध्यापन के दायित्व से वर्ष 2012 में निवृत्त होने के बाद चेक गणराज्य की राजधानी प्राग में स्वतंत्र लेखन से जुड़ी है।

सुश्री दागमार मूलत: सोवियत संघ में पैदा हुई और वहीं पली-बढ़ी, अपनी पढ़ाई समाप्त करने के बाद आपने एक चेक नागरिक से शादी कर ली थी और चेकोस्लोवाकिया में बस कर चेक गणराज्य की नागरिकता ग्रहण कर ली। एक लेखिका के रूप में आपका भारत से गहरा लगाव रहा, आपने लिखा था कि-मैंने दिल्ली में खुद से वायदा किया था कि वापसी के बाद भारत के संस्मरण लिखूँगी, वादा पूरा हुआ और समझ में आया कि भारत तो मेरे भीतर पहले से मौजूद था। अब तो मेरे बेटे भी जानते हैं कि मैं बार-बार भारत आती रहूँगी, क्योंकि एक तरह से भारत, हमारे लिये नये जीवन का नया आरंभ है।

मध्यप्रदेश शासन **सुश्री दागमार मारकोवा** को विदेशी मूल के व्यक्ति द्वारा हिन्दी भाषा की समृद्धि तथा उसके विकास में किये गये अमूल्य योगदान के लिए स्थापित **राष्ट्रीय फादर कामिल बुल्के सम्मान वर्ष 2023** से सादर विभूषित करता है।

राष्ट्रीय गुणाकर मुले सम्मान

वर्ष 2022

डॉ. कृष्ण कुमार मिश्र, मुम्बई

पूर्व में सम्मानित लेखक

1.	डॉ. पुरुषोत्तम भट्ट चक्रवर्ती, भोपाल	2015
2.	श्री हरिमोहन, आगरा	2016
3.	डॉ. शिवचन्द्र दुबे, भोपाल	2017
4.	प्रो. कपूरमल जैन, भोपाल	2018
5.	डॉ. पद्याकर धनंजय सराफ, भोपाल	2019
6.	डॉ. संतोष चौबे, भोपाल	2020
7.	श्री जयंत विष्णु नार्लीकर, कोल्हापुर	2021

डॉ. कृष्ण कुमार मिश्र, मुम्बई

सुप्रतिष्ठित वैज्ञानिक एवं लेखक डॉ. कृष्ण कुमार मिश्र का जन्म 15 मार्च, 1966 को ग्राम-छतरीपुर (उत्तरप्रदेश) में हुआ है। आपने वर्ष 1987 में इलाहाबाद विश्वविद्यालय से एम.एस.सी. (रसायन विज्ञान) तथा वर्ष 1992 में रसायन विज्ञान में पीएच.डी. की उपाधियाँ प्राप्त की हैं। आपका हिन्दी में शैक्षिक एवं लोकोपयोगी वैज्ञानिक साहित्य के सृजन में उल्लेखनीय योगदान है, देश में वैज्ञानिक साक्षरता को बढ़ावा देना तथा विज्ञान लोक-व्यापीकरण के लिए विगत तीन दशकों से निरन्तर मौलिक लेखन के साथ-साथ अनुवाद कार्य भी आपके महत्वपूर्ण कार्य है। आपकी अब तक विज्ञान संबंधी कुल 25 पुस्तकें तथा 300 से ज्यादा लेख प्रकाशित हो चुके हैं।

आपकी लोकोपयोगी विज्ञान पर प्रकाशित प्रमुख पुस्तकों में - जल जीवन का आधार, लोकविज्ञान समकालीन रचनाएँ, खोजे हुए प्रश्न, खानपान और रसायन, दैनिक जीवन में विज्ञान की भूमिका, स्वास्थ्य एवं पर्यावरण-रोचक निबंध, जल संसाधन-गहराता संकट, तारीखों में विज्ञान इत्यादि शामिल हैं। होमी भाभा केन्द्र द्वारा तैयार विज्ञान की अनेक पुस्तकों का आपने हिंदी में अनुवाद किया है। डॉ. कृष्ण कुमार मिश्र वर्ष 2008 से हिन्दी में एक स्वतंत्र एवं नवोन्मेषी शैक्षिक ई-लर्निंग पोर्टल (http://vigyanshiksha.in) का संचालन कर रहे हैं, हिन्दी में शैक्षिक ई-सामग्री के विकास पर कई राष्ट्रीय कार्यशालाओं का आयोजन आपने किया है। आपने लगभग 80 राष्ट्रीय एवं अन्तरराष्ट्रीय संगोष्ठियों में प्रतिभागिता की है तथा विभिन्न वैज्ञानिक सेमीनारों में 47 व्याख्यान अब तक दिये है, साथ ही रेडियो पर आपकी अब तक 30 विज्ञान वार्ताएँ प्रसारित हो चुकी हैं।

देश की प्रतिष्ठित विज्ञान पत्रिकाओं जिनमें करण्ट साइंस, एवरीमेन्स साइंस, बॉयोलॉजी एजुकेशन, स्कूल साइंस, साइंस रिपोर्टर, विज्ञान प्रगति, वैज्ञानिक, आविष्कार, इलेक्ट्रानिकी आपके लिए, विज्ञान सम्प्रेषण, विज्ञान गंगा इत्यादि शामिल हैं, में आपका निरन्तर लेखन जारी है। साथ ही साहित्यिक पत्रिकाओं जैसे - अक्षरा, सोच विचार, बाल भारती, पुस्तक-संस्कृति, हिंदी गरिमा, अवध अर्चना, भाषा किरण, सृजन संदर्भ, गर्भनाल, अंतिम जन, गांधी मार्ग, शोधावरी, जनभाषा में भी निरंतर लेख एवं आलेख प्रकाशित।

महाराष्ट्र राज्य पाठ्यपुस्तक द्वारा कक्षा 12वीं की प्रकाशित 'हिंदी युवक भारती' में 'ओजोन विघटन का संकट' शीर्षक से आपके द्वारा लिखित लोकविज्ञान विषयक लेख प्रकाशित। भारत सरकार के शिक्षा मंत्रालय की स्वायत्तशासी संस्था, नेशनल बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली द्वारा प्रकाशित लोकोपयोगी विज्ञान की मेरी पुस्तक 'जल-जीवन का आधार' का मध्यप्रदेश सरकार द्वारा राज्य के स्कूलों के लिए समग्र शिक्षा कार्यक्रम हेतु विशेष प्रकाशन, तदनंतर बिहार एवं राजस्थान सरकारों द्वारा समग्र शिक्षा कार्यक्रम हेतु विशेष पुनर्मुद्रण, वर्तमान वर्ष में हरियाणा सरकार द्वारा भी इस पुस्तक का अपने राज्य के स्कूलों के लिए समग्र शिक्षा हेतु विशेष पुनर्मुद्रण कार्य। स्वास्थ्य सबकी आवश्यकता एवं योग-विश्व को भारत का अनुपम उपहार शीर्षक से दो लोकोपयोगी विज्ञान लेख हिंदी पाठ्यपुस्तक एवं अभ्यास पुस्तिका, मैथिली में क्रमशः कक्षा-7 एवं कक्षा-8 में शामिल।

आपको अब तक विभिन्न मान-सम्मान से विभूषित किया जा चुका हैं, जिसमें- राजभाषा भूषण पुरस्कार, शताब्दी सम्मान, होमी जहाँगीरभाभा पुरस्कार, के.एन. भाल नामित पुरस्कार एवं शिक्षा भूषण सम्मान शामिल है।

मध्यप्रदेश शासन **डॉ. कृष्ण कुमार मिश्र** को वैज्ञानिक एवं प्राविधिक लेखन में हिंदी की उपयोगिता और उसकी व्यवहारिकी को प्रतिष्ठित करने के लिए स्थापित **राष्ट्रीय गुणाकर मुले सम्मान वर्ष 2022** से सादर विभूषित करता है।

राष्ट्रीय गुणाकर मुले सम्मान

वर्ष 2023

श्री देवेन्द्र मेवाड़ी, दिल्ली

पूर्व में सम्मानित लेखक

1.	डॉ. पुरुषोत्तम भट्ट चक्रवर्ती, भोपाल	2015
2.	श्री हरिमोहन, आगरा	2016
3.	डॉ. शिवचन्द्र दुबे, भोपाल	2017
4.	प्रो. कपूरमल जैन, भोपाल	2018
5.	डॉ. पद्याकर धनंजय सराफ, भोपाल	2019
6.	डॉ. संतोष चौबे, भोपाल	2020
7.	श्री जयंत विष्णु नार्लीकर, कोल्हापुर	2021
8.	डॉ. कृष्ण कुमार मिश्र, मुम्बई	2022

श्री देवेन्द्र मेवाड़ी, दिल्ली

श्री देवेन्द्र मेवाड़ी का जन्म 7 मार्च 1944 को ग्राम-कालाआगर, जिला- नैनीताल (उत्तराखंड) में हुआ है। आपने वनस्पति शास्त्र में एमएससी, हिंदी में एम.ए. तथा पी.जी. डिप्लोमा की उपाधियाँ प्राप्त की हैं। आपकी प्रतिष्ठा एक सुप्रतिष्ठित लेखक, सम्पादक, स्टोरीटेलर एवं अनुवादक के रूप में सर्वविदित है। आपने देश के विभिन्न संस्थाओं में सेवाएँ दी हैं जिनमें भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद्, दिल्ली में 3 वर्ष, पंजाब नेशनल बैंक में चीफ़ पब्लिक रिलेशंस के पद पर 22 वर्ष तथा गोविंद वल्लभ पंत कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, पंतनगर में लगभग 13 वर्ष शामिल हैं।

आपकी मौलिक पुस्तकों में विज्ञाननामा, विज्ञान प्रसंग, दस कहानियाँ, कोख, भविष्य तथा बाल विज्ञान साहित्य में विज्ञान बारहमासा, सौरमण्डल की सैर, विज्ञान और हम, फसले कहें कहानी, मोनू मोनाल, मेरी यादों का पहाड़, छूटा पीछे पहाड़, कथा कहो यायावर इत्यादि शामिल हैं। आप विगत लगभग 6 दशकों से देश की विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में लेखन कार्य कर रहे हैं जिनमें धर्मयुग, साप्ताहिक हिन्दुस्तान, दिनमान, जनसत्ता, नवभारत प्रमुख हैं। अब तक लगभग 3500 से अधिक मौलिक-वैज्ञानिक लेख आपके प्रकाशित हो चुके हैं। आपने कई वैज्ञानिक पुस्तकों जैसे मंगल बुला रहा है, हमारे पक्षी, कहानी रसायन विज्ञान की, जीन और जीवन, अमेरिकी मासिक पत्रिका 'स्पेन', मासिक ड्रीम-2047 तथा विज्ञान प्रकाश पत्रिका के लिए 100 से अधिक वैज्ञानिक लेखों का हिंदी में अनुवाद किया है।

वर्ष 1968 से अब तक आकाशवाणी से आपकी 100 से अधिक वार्ताएँ, परिचर्चाएँ प्रसारित हो चुकी हैं, साथ ही दूरदर्शन से भी 'नई बात नया चलन', 'कृषक मंच' के माध्यम से आपके संवाद एवं लेख प्रसारित हुए हैं। आपने देश के प्रतिष्ठित शासकीय एवं अर्द्धशासकीय संस्थानों में भी वैज्ञानिक विषयों पर परिसंवाद एवं व्याख्यान दिये हैं। इन सबके साथ लोकसभा

तथा राज्यसभा टीवी से 'विज्ञान दर्पण' के 68 एपिसोड प्रसारित हुए है, जिनका पटकथा लेखन आपके द्वारा किया गया है। फिल्म 'धूमकेतु' के लिए भी आपने पटकथा लेखन का कार्य सम्पन्न किया है।

आपने देश के लगभग सभी प्रतिष्ठित समारोहों एवं आयोजनों में प्रतिभागिता की हैं, जिनमें प्रमुख है विज्ञान पर्व, विज्ञान महोत्सव, फेस्टिवल ऑफ लेटर्स, दून लिटरेचर फेस्टिवल, साहित्य महोत्सव आदि। साथ ही आपने भारतीय साहित्यकारों के प्रतिनिधि के रूप में 11वें विश्व हिंदी सम्मेलन एवं पेरिस पुस्तक मेला में भी देश का प्रतिनिधित्व किया है। आपको अब तक देश के प्रतिष्ठित मान-सम्मानों से विभूषित किया गया है, जिनमें वनमाली विज्ञान कथा सम्मान एवं भारतेन्दु हरिश्चन्द्र राष्ट्रीय बाल पुरस्कार भी शामिल हैं।

मध्यप्रदेश शासन **श्री देवेन्द्र मेवाड़ी** को वैज्ञानिक एवं प्राविधिक लेखन में हिंदी की उपयोगिता और उसकी व्यवहारिकी को प्रतिष्ठित करने के लिए स्थापित **राष्ट्रीय गुणाकर मुले सम्मान वर्ष 2023** से सादर विभूषित करता है।

राष्ट्रीय हिन्दी सेवा सम्मान

वर्ष 2022

डॉ. दामोदर खड़से, पुणे

पूर्व में सम्मानित लेखक

1.	प्रो. एस. शेषारत्नम, विशाखापट्टनम	2015
2.	प्रो. ओकेन लेगो, ईटानगर	2016
3.	डॉ. छबिल कुमार मेहेर, सागर	2017
4.	श्री चन्द्रकांत पाटील, पुणे	2018
5.	डॉ. शीला कुमारी, त्रिवेंद्रम	2019
6.	श्री सुधीर मोता, भोपाल	2020
7.	श्री अजीत वडनेरकर, भोपाल	2021

डॉ. दामोदर खड़से, पुणे

हिन्दी साहित्य लेखन एवं हिन्दी भाषा के प्रचार-प्रसार में सक्रिय डॉ. दामोदर खड़से लेख, कविताओं के माध्यम से अपनी साहित्यिक अभिरूचि रखते है। आपने एम.ए., एम.एड तथा हिन्दी में पीएच.डी. की उपाधि प्राप्त की है। आपके हिन्दी साहित्य पर 5 शोध-कार्य, पीएच.डी. तथा उपन्यासों, कविताओं एवं कहानियों पर तीन एम.फिल. सम्पन्न हो चुके है। आपने महाराष्ट्र राज्य हिन्दी साहित्य अकादमी में कार्यकारी अध्यक्ष के रूप में 9 वर्ष तथा 30 वर्ष तक बैंक ऑफ महाराष्ट्र में सहायक महाप्रबंधक (राजभाषा) के रूप में अपनी सेवाएं दी है। आप देश के विभिन्न केन्द्रों, विश्वविद्यालयों एवं संस्थाओं में सम्मानीय सदस्य रह चुके हैं।

आपके कथा संग्रहों में - पार्टनर, आखिर वह एक नदी, इस जंगल में, यादगार कहानियाँ, गौरैया को तो गुस्सा नहीं आता, चुनी हुई कहानियाँ आदि है तथा उपन्यास - काला सूरज, भगदड़, खण्डित सूर्य, कोलाहल, बादल राग, खिड़कियाँ, एकांतगाथा आदि है, आपके कविता संग्रहों में - अब वहाँ घोसलें हैं, सन्नाटे में रोशनी, तुम लिखो कविता, प्रकाश पेरतना, रात, पेड़ को सब याद है, लौटती आवाजें, लौट आओ तुम आदि पुस्तकों के रूप में प्रकाशित हो चुकी हैं और 6 पुस्तकें प्रकाशनाधीन है, जिनमें पेड़ कभी अकेले नहीं होते, अनुभवामृत, कल की ही तो बात है, उस छोर पर तुम, गोपाल कृष्णन गोखले, ग्यारह मराठी कहानियाँ शामिल है। आपके द्वारा अनुदित पुस्तकों में - अछूत, रामनगरी, कालचक्र, पराया, भूले बिसरे दिन, ऐसे लोग ऐसी बातें, बारोमास, मन-सर्जन, कमला इत्यादि शामिल हैं।

कागज़ की ज़मीन, शब्दों की दहलीज़ पर, डॉ. दामोदर खड़से का सृजन संसार, नदी के साथ-साथ, साहित्य के शिखर-दामोदर खड़से, दामोदर खड़से-एक शिनाख्त

इत्यादि आप पर प्रकाशित ग्रंथ है। आप फिल्म एवं डाक्यूमेंट्री के स्क्रिप्ट लेखक तथा अनुवादक के रूप में भी कार्य कर चुके हैं।

विश्व हिन्दी न्यास न्यूयॉर्क के वार्षिक अधिवेशन में उद्घाटन वक्तव्य एवं संगोष्ठी, 9वें विश्व हिन्दी सम्मेलन (जोहांसबर्ग), बैंकाक में आयोजित हिन्दी सम्मेलन तथा 11वें विश्व हिन्दी सम्मेलन (मॉरीशस) में आप सहभागिता कर चुके हैं।

आपको हिंदी साहित्य में योगदान के लिए साहित्य अकादमी सम्मान, महाराष्ट्र भारती सम्मान, मुक्तिबोध सम्मान, प्रियदर्शनी सम्मान, नई धारा सम्मान, आचार्य रामचंद्र सम्मान, हिंदी सेवी सम्मान तथा शताब्दी सम्मान प्राप्त हो चुके हैं, साथ ही विभिन्न साहित्यिक, सांस्कृतिक एवं सामाजिक संस्थाओं द्वारा 40 से अधिक सम्मानों से सम्मानित किया जा चुका है। आप माननीय राष्ट्रपति के द्वारा 1992 में राष्ट्र साहित्य पुरस्कार और 2012 में गंगाशरण पुरस्कार से भी सम्मानित हो चुके है।

मध्यप्रदेश शासन **डॉ. दामोदर खड़से** को अहिन्दी भाषी लेखन के क्षेत्र में हिंदी के समृद्ध विकास, योगदान एवं सराहनीय कार्यों के लिए स्थापित **राष्ट्रीय हिन्दी सेवा सम्मान वर्ष 2022** से सादर विभूषित करता है।

राष्ट्रीय हिन्दी सेवा सम्मान

वर्ष 2023

डॉ. मनमोहन सहगल, पटियाला

पूर्व में सम्मानित लेखक

1.	प्रो. एस. शेषारत्नम, विशाखापट्टनम	2015
2.	प्रो. ओकेन लेगो, ईटानगर	2016
3.	डॉ. छबिल कुमार मेहेर, सागर	2017
4.	श्री चन्द्रकांत पाटील, पुणे	2018
5.	डॉ. शीला कुमारी, त्रिवेंद्रम	2019
6.	श्री सुधीर मोता, भोपाल	2020
7.	श्री अजीत वडनेरकर, भोपाल	2021
8.	डॉ. दामोदर खड़से, पुणे	2022

डॉ. मनमोहन सहगल, पटियाला

सुप्रतिष्ठित हिंदी साहित्यकार एवं लेखक डॉ. मनमोहन सहगल का जन्म 15 अप्रैल, 1932 को जालन्धर (पंजाब) में हुआ है। आपने हिन्दी तथा दर्शन शास्त्र में एम.ए., बी.टी., पीएच.डी एवं डी.लिट् की उपाधि प्राप्त की हैं। आप देश के विभिन्न प्रतिष्ठित संस्थानों में प्राध्यापक, रीडर, अध्यक्ष, आचार्य एवं वरिष्ठ अन्वेषक के रूप में अपनी सेवाएँ प्रदान कर चुके हैं।

आपने हिंदी साहित्य के क्षेत्र में महत्वपूर्ण आयाम स्थापित किये हैं। प्रतिष्ठित आपकी मौलिक रचनाएँ हैं, जिनमें- गुरु ग्रन्थ साहिब : एक सांस्कृतिक सर्वेक्षण, गुरुवाणी-चिन्तन, अमिता-कृति और कृतिकार, पंजाब का कृष्ण-काव्य और सूरदास, गुरु गोविंद सिंह के काव्य का सांस्कृतिक अध्ययन : पंजाब का संदर्भ, शिव-स्वरुप श्रीचन्द्र, कथाकार यशपाल, संत गुरु अंगद देव इत्यादि शामिल है। आपके मौलिक उपन्यासों में -जिंदगी और जिंदगी, बदलती करवटें, कश्मीर की कसक, एक और रक्तबीज, नरमेध, अन्ना पासवान, घटता बढ़ता चांद, समझौते से पहले, सुर मिले मेरा तुम्हारा, काला सच इत्यादि शामिल हैं।

आलोचनात्मक सम्पादनों में हिन्दी उपन्यास के पद-चिन्ह, पंजाब में रचित सुदामा-चरित काव्य, गुरु प्रताप सूरज ग्रन्थ : भाग-2, आत्म रामायण, राम रहस्य आदि शामिल हैं। भाषा-विभाग द्वारा प्रकाश्य/सम्पादित पाण्डुलिपियों में -सार रामायण बाबा राम दास, गुरु संत-वाणी, कवि कीरत सिंह का राम-काव्य तथा रुक्मिणी मंगल शामिल है। श्रीमद्भगवतगीता, गुरु गोबिन्द सिंह, सरदार भगत सिंह, संत नामदेव, बाबा शेख फरीद आदि भाषा विभाग द्वारा प्रकाशित बाल साहित्य रचनायें तथा गुरु नानक : व्यक्तित्व और विचार, गुरु नानक : जीवन, युग एवं शिक्षाएँ, प्रेम, शांति और सफलता, स्वार्थ और घृणा हमारे शत्रु क्यों हैं?, उच्च जीवन की प्राप्ति, प्रीतलड़ी की प्रिय कहानियाँ इत्यादि आपकी अनुदित रचनायें है, और भारतीय शिक्षा का इतिहास, आधुनिक-शिक्षा-शास्त्री, स्कूल प्रबन्ध, शिक्षा-दर्शन, समाज-मनोविज्ञान आपकी कुछेक साहित्येतर रचनायें हैं।

हिन्दी साहित्य में किये गये अतुलनीय कार्यों को रेखांकित करते हुए समय-समय पर आपको विभिन्न मान-सम्मानों से विभूषित किया गया है, जिनमें शिरोमणि साहित्यकार सम्मान, सौहार्द्र पुरस्कार, साहित्य मनीषी सम्मान, सारस्वत सम्मान आदि शामिल हैं।

मध्यप्रदेश शासन **डॉ. मनमोहन सहगल** को अहिन्दी भाषी लेखन के क्षेत्र में हिन्दी के समृद्ध विकास, योगदान एवं सराहनीय कार्यों के लिए स्थापित **राष्ट्रीय हिन्दी सेवा सम्मान वर्ष 2023** से सादर विभूषित करता है।